RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

# मानव विकास के लिए मूल्य शिक्षा

डॉ. सोनम शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर

**ARTICLE DETAILS**

**Article History**
*Published Online:* 20 January 2019

**Keywords**
मूल्यपरक शिक्षा, डार्विन, स्पेंसर एवं महात्मा गाँधी

**ABSTRACT**

*आज हम चाँद और मंगल से भी एक कदम आगे निकल गये हैं। हमने अपने चारों ओर प्रकृति के समानान्तर एक नई दुनिया बना दी है। यह दुनिया ऐसी है, जिसे मानव ने अपनी सुविधा के लिए बनाई है, लेकिन तमाम सुविधा के बाद भी मानव आज सुखी नहीं है। मानव इन सुविधाओं को अपनाने के बाद और विचलित हो गया है, जिसका कारण यह है कि हमने जो प्राप्त किया है उसके सकारात्मक प्रभाव की तुलना में नकारात्मक प्रभाव अधिक है। हमने जो शिक्षा प्राप्त की है वह हमारी ज्ञान–विज्ञान की समझको ऊँचाई पर ले जाने में सहायक रही है लेकिन कहीं न कहीं हम संस्कार, चिंतनशील समाज सम्मत विचारधारा के मामले में पिछड़ रहे हैं और यही मानसिक अशांति का कारण बन गया है। अगर हम ध्यान से, निर्पेक्ष भाव रखकर, अपने चारों ओर परीक्षण करें तो पायेंगे कि समाज में व्यवस्था को चलाने के लिए कुछ मूल्य स्थापित किये गये थे, जो हमे शिक्षा के माध्यम से दिये जा रहे थे। इसे मूल्य परक शिक्षा या शैक्षिक मूल्य की संज्ञा दी गई थी। यही आज शैक्षिक मूल्य या तो हमारी शिक्षा से गायब हो गये हैं या हम उसे छोड़ते जा रहे हैं।*

इन सारे तथ्यों को देखते हुए हमें मूल्य शिक्षा की अति आवश्यकता है। यह मूल्य शिक्षा मूल रूप से वह शिक्षा है जिसे समकालीन समाज अपनी व्यवस्था को अनुशासित करने के लिए अपनाती है। वस्तुतः शिक्षा के संदर्भ में कई विद्वानों के अलग–अलग तर्क है, स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ''हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शांति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैर पर खड़ा हो सके''। अपने इस कथन के माध्यम से विवेकानन्द जी ने शिक्षा को व्यक्तिगत नहीं बल्कि जन कल्याणकारी बताया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मूल्य परक शिक्षा वह शिक्षा है जो न केवल हमारे उत्तम चरित्र का निर्माण करती है, बल्कि यह हमारे मन की अशांति को दूर कर पुराने तथा नए मूल्यों के बीच सामन्जस्य बैठाकर स्वयं से समाज सम्मत नये मूल्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करती है।

यदि शैक्षिक मूल्यों पर नजर डालें तो यह पता चलता है कि यह सब हमारे जीवन को अनुशासित करने हेतु ही नहीं आवश्यक है अपितु हमारे समाज को सही दिशा में चलाने के लिए भी आवश्यक है। जहाँ तक वैयक्तिक मूल्य शिक्षा एवं सामाजिक मूल्य शिक्षा का सवाल है तो यह मानव के भीतर के अंधेरे या अज्ञानता को मिटाकर उसे ज्ञान मार्ग पर ले जाता है जिससे मनुष्य केवल अपना ही विकास नहीं करे बल्कि सम्पूर्ण समाज को समकालीन संकट से निकाल सकें। राजनैतिक मूल्यपरक शिक्षा हमें वर्तमान राजनैतिक अधिकारों के प्रति सचेत करती है साथ ही यह हमें अपनी शासन व्यवस्था में उत्पन्न खामियों को दूर कर एक नई व्यवस्था अपनाने की तरफ ले जाती है जहाँ सबको एकसमान अधिकार प्राप्त हो। नैतिक तथा चारित्रिक मूल्य परक शिक्षा मानव को उसके अन्दर अच्छे संस्कार भरने की अभिप्रेरणा प्रदान करती है। जिसे अपनाने से मानव को अपने आप के दुर्गुणों को समाप्त कर सके तथा सामान्य मानव से कल्याणकारी मानव बन सके। राष्ट्रीय मूल्य परक शिक्षा का अर्थ है कि शिक्षा के वे मूल्य जो हमें राष्ट्र के विकास करने की अभिप्रेरणा देते हो तथा हर मानव के भीतर अपने राष्ट्र के प्रति सच्चे देश प्रेम को भर सके।

परन्तु वर्तमान समय में परिस्थितियाँ पूर्णतः अलग है। हम तेजी से विकास करते जा रहे है। हमारे पास आज मोबाइल फोन है, इण्टरनेट है विभिन्न तकनीकी साधन उपलब्ध है। हमारे पास एक से बढ़कर एक तेज चलने वाले परिवहन के साधन हैं। हम चाहें तो गर्मी में भी बर्फ जमा लें और जाड़े में भी घर को गर्म कर लें। कुल मिलाकर कहें तो हमारे मायने में ये विकास ही कहलाएगा। लेकिन इस विकास का परिणाम क्या हुआ अर्थात् इस विकास के लिए हमें कौन–कौन सी कीमत अदा करनी पड़ी ये देखना आवश्यक है। हम सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैचारिक एवं मानसिक स्तर पर इसका विश्लेषण करें तो हमें पता चलता है कि जिसे हम विकास कहते है उसकी आड़ में हमारे मूल्यों का पतन हुआ है। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि विकास में सबसे अहम योगदान शिक्षा का ही रहा है। यह शिक्षा जब अपने समकालीन या पूर्णकालीन स्थापित मूल्यों से अलग हो जाती है तब स्थिति तो गलत परिणाम देने लगती है।

समाज का निर्माण व्यक्तियों के समूह से होता है। यह व्यक्तियों का ऐसा संगठन होता है जहाँ हर व्यक्ति अपनी शक्ति तथा योग्यता के अनुसार अपना पद पाता है। पहले दौर में परिवार संयुक्त हुआ करते थे। तब हर व्यक्ति एक–दूसरे की सहायता किया करता था। अब शिक्षा के बढ़ते आयाम ने व्यक्ति के भीतर एकाकीपन का वास होने लगा है। आज नौकरियाँ भी दूर–दूर मिलने लगी हैं जिसका परिणाम यह हुआ कि संयुक्त

RRIJM 2015, All Rights Reserved

परिवार टूट गये हैं तथा एकल परिवार अधिक बन रहे हैं। वस्तुतः इसका मूल कारण यह है कि हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति हमें सामाजिक बनने में सहायक सिद्ध नहीं हो पा रही है। यह सत्य है कि हमारी किताबों में उस पर लम्बे–चौड़े ताने–बाने बुने गए हैं लेकिन यदि करीब से देखें तो हम पायेंगे कि इन किताबों में जो भी मूल्य परक शिक्षा से सम्बन्धित विषयवस्तु हैं उनका प्रभाव अल्प है। यदि हमें समाज को संगठित रूप प्रदान करना तो इन मूल्यों की स्थापना शिक्षा व्यवस्था तथा विषयवस्तु दोनों में करनी होगी।

जहाँ तक वैज्ञानिक प्रगति की बात है तो हम अपनी कल्पना से भी आगे निकल गए है। हम आज मंगल पर कदम रख चुके हैं। आज हमारे पास सभी सुविधा के साधन उपलब्ध हैं। दुनिया तेज रफ्तार में बढ़ रही है। महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिन्स ने एक बार कहा था कि ''हम आज वहाँ पहुँच चुके हैं जहाँ 200 वर्ष बाद हमें दूसरे ग्रह पर जीवन ढूंढना होगा और यह पृथ्वी मानव के रहने लायक नहीं रह जायेगी।'' उनका यह कथन आज की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए सत्य प्रतीत होता है। पहले हम शिक्षा के साथ प्रकृति को जोड़कर अध्ययन करते थे। तब हमारे मूल्य परक शिक्षा में सतत् पोषणीय विकास अर्थात् अगली पीढ़ी को ध्यान में रखकर संसाधन विकसित करने की योजना समाहित होती थी। दूसरी तरफ हमने विकास की धरणीयता को भी मूल्य परक शिक्षा में शामिल कर रखा था जिसका आशय है, कि बिना पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए हम विकास की बात सोचते थे। परन्तु अब स्थिति बिल्कुल भिन्न है। आज हम पर्यावरण को ताक पर रखकर विकास कर रहे हैं। वनों को काटकर शहर स्थापित कर रहे है।

आज संसाधनों के मामले में हम जरूरत से अधिक लालची बन गये हैं हम अपने हिस्से से संतुष्ट नहीं होते बल्कि दूसरे का भी पाना चाहते हैं। यह सोच हमारे अंदर मूल्य शिक्षा के अभाव के कारण उत्पन्न हुई है।एक तरफ तो हमने विज्ञान को बढ़ावा दिया है और दूसरी तरफ शिक्षा में मूल्यों को कम किया है। आज जिस प्रकार की वैज्ञानिक प्रगति के माध्यम से हम प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं उसका परिणाम भी सामने है। ग्लोबल वार्मिंग बढ़ने के कारण आज हमें तरह–तरह की बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है। कहीं बाढ़, कहीं सूख तो कहीं अत्याधिक गर्मी और ठंडइत्यादि। इन सारी समस्याओं की मूल जड़ है कि हमने अपनी शिक्षा के विषयवस्तु में विकास की धारणीयता तथा सतत् पोषणीय विकास जैसे मूल्यों को कम महत्वता दी है और भौतिक संसाधनों को ज्यादा महत्व दिया है।

हमारे विकास के लिए वैचारिक स्तर का अवलोकन अति आवश्यक है। विचार वह मानसिक शक्ति है जो हमें सदा समस्याओं से निकालकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। यह तब होता है जब मूल्यपरक शिक्षा हमारे जीव में शामिल होती है। विचारों के पतन के कारण अनेकों समस्याऐं उत्पन्न हो रही है। व्यक्ति का मूल्य पतन, समाज में मूल्यों के ह्रास का कारण बन रहा है। आज हर मानव अपने को दूसरे से श्रेष्ठ सिद्ध करने की कोशिश में लगा रहता हैं साथ हीवह दूसरों के अच्छे विचारों को दबाने के प्रयास में भी रहता है। मूल्यपरक शिक्षा मानव को वैचारिक स्तर और आत्मिक स्तर पर समद्ध बनाती है। अगर नैतिकता की बात करें तो हम इस स्तर परभी वर्तमान समय में विफल साबित हो रहें है। अखबारों के पन्ने पर मानवीय अत्याचार, नैतिक विनाश की खबरें, विकास की खबरों के साथ छपी मिलती है। जालसाजी, धोखाधड़ी, घूसखोरी, जैसे अपराधों के साथ ही बच्चों और महिलाओं के साथ अनैतिक कृत्य भी बढ़ते जा रहे है। यह कैसे विकास के ओर देश बढ़ रहा है। भविष्य की पीढ़ी को ध्यान में रखकर मूल्यपरक शिक्षा अनिवार्य रूप से देनी चाहिए।

वर्तमान समाज की दिशा–दशा को यदि आज हम नहीं बदलते हैं तो आगे आने वाली पीढ़ी और खतरनाक स्थिति में पहुंच जायेगी। मूल्य परक शिक्षा वस्तुतः हमें मानसिक शांति और संतुष्टी प्रदान करती है। हमें मानसिक तौर पर समाज, राष्ट्र, अर्थव्यवस्था, नैतिक जीवन के बारे में सकारात्मक रूप में सोचने पर विवश करती है। अतः मानसिक विकास के लिए हमें मूल्य परक शिक्षा की अति–आवश्यकता है। यदि हम आर्थिक विकास की बात करें तो वहाँ भी मूल्यों की अति आवश्यकता है। संसार का प्रत्येक धर्म मानव के लिए समान सीख ही देता है,सहभागिता जैसे के साथ मानव का विकास। धर्म के जो मूल्य मानव के विकास के लिए चाहिए उसे शिक्षा के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इनमें सदाचार, भाईचारा, सत्यनिष्ठा, परोपकार, सहनशीलता, विनयशीलता, समानता एवं सह–अस्तित्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

अतः हमें चाहिए कि हम नैतिक मूल्यों की पुर्नस्थापना करें जिससे मानव का सम्पूर्ण विकास हो सकें तथा उसका चिंतन सद्भाव पूर्ण हो। शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान समय में अति–आवश्यकता है। हमारा देश विकासशील देश है और हमारे पास सीमित संसाधन है। ऐसी परिस्थिति में हम जल्द विकास के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते है और इस प्रयास में हमारे समाज के सवरूप में बदलाव हो रहा है। इस विकास की दौड़ में बेईमानी, लूट, धोखाधड़ी जैसे भ्रष्टाचार का भी तेजी से विकास हो रहा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हम विकास के बिना अपनी कल्पना ही नही कर सकते है। यह मानव का प्राकृतिक गुण है। मानव के इस विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बिना शिक्षा के मानव का विकास एक निश्चित और अपेक्षित दिशा में सम्भव नहीं है। शिक्षा हमें विकास के नये मार्ग को पहचानने, उस पर अमल करने तथा सावधानीपूर्वक चलने की प्रेरणा देती है। तो शिक्षा और विकास का आपसी सम्बन्ध पूरक की तरह होता है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। जहाँ विकास होता है तो शिक्षा को भी वहाँ उसमें जोड़ा जाता है। मूल्यविहीन शिक्षा सतत् पोषणीय विकास तथा विकास की धारणीयता दोनों समाप्त हो जाती है। इसलिए विकास के लिए हमें शिक्षा चाहिए

RRIJM 2015, All Rights Reserved 

और शिक्षा तभी पूर्णरूप से लाभकारी होगी जब इसके साथ मूल्यों का जुड़ाव हो। बिना मूल्यों की शिक्षा हमारे आर्थिक विकास को या भौतिक विकास को तो अवश्य बढ़ा सकती है लेकिन उससे हमारा नैतिक और चारित्रिक विकास नहीं हो सकता है। हम जिस विकास को विकास के रूप में लेते हैं उसी के पीछे विनाश भी चला आता है। जैसा कि विज्ञान के साथ अक्सर जोड़कर कहा जाता है। मानव को अगर पूर्णरूप से विकास करना है तो हमें अब अपने शिक्षा के स्तर में बदलाव लाना होगा और शिक्षा के साथ मूल्यों को भी जोड़ना होगा। शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया को पुनः मूल्यों से परिपोषित करने की आवश्यकता है। विभिन्न शाश्वत मूल्यों को आत्मसात करने की आवश्यकता है तभी मानव विकास सही मायनों में सार्थक रूप से होगा।

**संदर्भ ग्रंथ :**

[1] कबीर, हुमायुं (1961) : शिक्षा का दर्शन, एशिया पबिलशिंग हाऊस, मुम्बई।

[2] गांधी, मोहनदास करमचंद्र (1945) : मेरे सपनों का भारत, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद।

[3] गांधी, मोहनदास (1909) : हिन्द स्वराज, नवजीवन प्रकाश मंदिर, अहमदाबाद।

[4] दामोदन, के0 (1967) : भारतीय चिंतन की परम्परा, पीपुल्क पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली।

[5] दिनकर, रामधारी सिंह (1997) : संस्कृति के चार अध्याय, उदयलाल प्रेस, पटना।

[6] मदान, पूनम (2014) : उदीयमान भारत में शिक्षक, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।

RRIJM 2015, All Rights Reserved 